

欽定宋史

卷二百二十九至二百三十

欽定四庫全書

欽定四庫全書

宋史卷二百二十九

元 中 書 右 丞 相 總 裁 脫 脫 等 修

世系表第二十

宗室世系十五

鍾國公武經郎  
諡寧靖  
仲胡  
修武郎  
士翻

成忠郎  
不學  
訓武郎  
不居

善 功  
勛 功  
善 勛

汝 汝 汝 汝 汝 汝

璵 璵 璵 璵 璵 璵  
崇 崇 崇 崇 崇 崇

崇 崇 崇

宰 平 繩

準 茂 僊

必 必 必 必 必 必

玳 莒 煊 烱 燿 燿

[illegible]



忠訓郎  
士造  
修武郎  
士還

承信郎  
不必

不窮  
不穢

不思

善 善 善 善  
年 膠 溢 錯

善

仲

汝 汝 汝 汝

汝 汝 汝 汝 汝

汝

殖 絺 服 榆

記 詞 語 設 論

俎

崇 崇

崇 崇 崇 崇 崇

崇 崇 崇 崇 崇

澗 蹤

塘 塽 堦 瑄 楸

程 樞 糖 楨 杞

必

必 必 必 必 必 必 必

膠

瑄 堅 璽 玉 璫 琬 琰 琰

貝

翳





汝邊崇崇墜獄

汝汝汝汝汝  
核榴欄梅枌

汝汝  
鑾缶

汝汝  
鑾缶

臨汝侯  
宗孟  
舒王諡華原郡  
安孝宗公諡傳華陰侯商國公



肅

節仲先士稷

不屈

善善善  
通

善善善  
磨

激

汝汝

躬詢

崇崇

轅轅

諷武郎

不濁

宜教郎

不辱

贈武經

大夫不

混

善

虎

汝

檣

崇

檣

善

豹

汝

詠

崇

現

汝

說

崇

璠

武功郎  
士習

不淪

秉義郎

不瀆

成忠郎

不汨

善

山

汝

珉

崇

建

汝

逸

崇

造

東頭供  
奉官士  
然

不濶

忠訓郎  
不溢

武翼郎

不注

善  
艘

汝汝汝汝  
攢慄懾恤

善孚汝瀛崇

汝汝  
翠園  
崇崇崇崇

汝燈崇

汝汝  
愁白  
崇

改遷崇崇

唔 必  
必 必

昇騰昕燠  
必必必必

邊喧傳咬

陽  
必

必

澄良整

董 鶯 鄭 耀

訶訶讎



博平侯

仲丁

房國公

仲曉

忠順郎

士迂

贈朝散

郎不愆

善善

明濱

汝

琢

崇崇

穩機

必必必

泌瀟杵

善

沈

汝

冰璣

崇崇

潔琬

善

汴

汝

璧韞

崇崇

朋

必

登

善

濂

汝

璵璠

崇崇

璵璠

善

漣

汝

船杜

崇崇

岳

必必必

登

汝

汝

璠

崇崇

岳

必必必

嶠

汝

璠

崇崇

皇

必必必

嶠

武翼郎  
士那

不忤  
不嫌  
不懈  
不愠  
不愧  
不惡

不傲  
不悚  
從常郎  
不忤

|   |   |   |   |   |   |   |   |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 善 | 善 | 善 | 善 | 善 | 善 | 善 | 善 |
| 虞 | 膺 | 同 | 縻 | 汝 | 汝 | 汝 | 汝 |
| 汝 | 汝 | 汝 | 汝 | 汝 | 汝 | 汝 | 汝 |
| 櫚 | 機 | 接 | 攢 | 梭 | 櫨 | 崕 | 崕 |
| 崇 | 崇 |   |   | 崇 |   | 崇 |   |
| 臺 | 荒 |   | 穆 |   |   | 彼 |   |
|   |   |   |   |   |   | 必 |   |
|   |   |   |   |   |   | 積 |   |

武翼郎  
士曜

不恫

善

輪

汝

莠

崇

崇

瑗

事必

柸

良

堦

圳

友

誼

忠翊郎  
忠衛郎  
忠訓郎  
士諒

不恫  
不怖  
不懼  
不慄  
承節郎  
不忿

善

誘

汝

侗

崇

崇

詩

澤

善

輯

汝

覺

崇

種

必

必

堦

錄

良

堦

圳

友

誼

善

詩

汝

武

崇

崇

鑰

必

盤

汝

仔

崇

崇

場

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

汝

要

崇

崇

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

崇

崇

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

堦

|     |  |     |  |     |  |     |  |    |  |
|-----|--|-----|--|-----|--|-----|--|----|--|
| 仲洗  |  | 建安侯 |  | 保義郎 |  | 承信郎 |  | 不難 |  |
| 士應  |  | 武德郎 |  | 士改  |  | 不怠  |  | 不難 |  |
| 忠訓郎 |  | 修武郎 |  | 不怠  |  | 不怠  |  | 不難 |  |
| 秉義郎 |  | 修武郎 |  | 不怠  |  | 不怠  |  | 不難 |  |
| 不貪  |  | 不貪  |  | 不怠  |  | 不怠  |  | 不難 |  |
| 承信郎 |  | 承信郎 |  | 不怠  |  | 不怠  |  | 不難 |  |
| 善   |  | 善   |  | 善   |  | 善   |  | 善  |  |
| 善   |  | 善   |  | 善   |  | 善   |  | 善  |  |
| 善   |  | 善   |  | 善   |  | 善   |  | 善  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝   |  | 汝  |  |
| 汝   |  | 汝   |  |     |  |     |  |    |  |



士忠  
武翼郎 忠訓郎  
士奇 不湮

善  
證  
汝  
汝  
汝  
汝  
汝  
錄  
崇  
淵

保義郎  
不注

汝  
汝  
汝  
汝  
汝  
錄

保義郎  
不誤

善  
顯  
汝  
汝  
汝  
塙

不淺

善  
納  
汝  
汝  
汝  
侶  
冢

成忠郎  
士倫 不忌

左武衛  
大將軍  
仲嗣

不惹

左班殿  
直士 不惹  
右班殿  
直士 僖  
敦武郎 承信郎  
士軹 不愚

忠翊郎  
不惕

善  
纏  
汝  
玗  
崇

崇  
適  
必  
益

不危  
秉陽侯武經大承節郎  
仲塾夫士販不悱

[illegible]